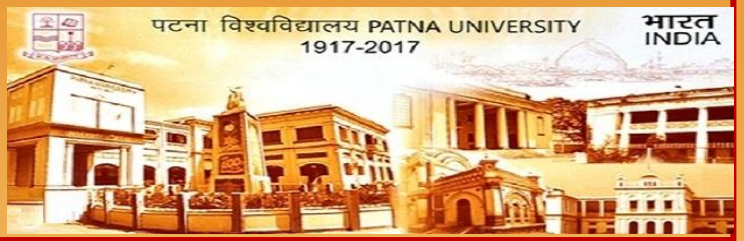

Patna University In News (30.03.2023)

दैनिक भास्कर

विगत वर्षों में बढ़ा रिसर्च जर्नल का दायरा

पीयू : 5 वर्षों में 1500 से अधिक रिसर्च जर्नल का हुआ प्रकाशन

एजुकेशन रिपोर्टर | पटना

पटना विश्वविद्यालय में विगत वर्षों में रिसर्च का दायरा बढ़ा है। विवि के अंतर्गत पिछले 5 वर्षों में 1500 से अधिक रिसर्च जर्नल व बुक का प्रकाशन किया गया है। वहीं इस वर्ष 2023 में अब तक 122 रिसर्च जर्नल का प्रकाशन हो चुका है और वर्ष के अंत तक 1000 जर्नल के प्रकाशन का लक्ष्य रखा गया है। विवि शोध पत्र प्रकाशन और शोध को बढ़ावा देने के लिए फंड का भी निर्धारण किया है। रिसर्च जर्नल व बुक पब्लिकेशन के लिए जो खर्च आयेगा उसका वहन विवि करेगी। रिसर्च सेल के रिव्यू के बाद यह खर्च छात्रों और शिक्षकों को दी जाएगी।

अब तक शिक्षकों के द्वारा अब तक 112 रिसर्च प्रोजेक्ट जमा : विवि के शिक्षकों के द्वारा अब तक 112 रिसर्च प्रोजेक्ट जमा हो चुके हैं। ये रिसर्च जर्नल विभिन्न फंडिंग एजेंसी जैसे यूजीसी, डीएसटी, आईसीएसआर, आईएसएसआर, आईसीएआर को जमा किया गया है। इसमें दर्जन से अधिक शोध प्रस्ताव की स्वीकृति विश्वविद्यालय को प्राप्त हो चुकी है। कुछ प्रस्ताव प्रक्रियाधीन हैं। विगत कुछ दशक में इस दिशा में बेहतर कार्य हुए हैं और विवि के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है।

रिसर्च जर्नल प्रकाशन के लिए विवि एक करोड़ रुपए खर्च करेगी : पटना विश्वविद्यालय के द्वारा एक करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान किया गया है। सभी शोधार्थियों को उनके पर्यवेक्षक के साथ कम से कम 2 शोधपत्रों के प्रकाशन का निर्णय लिया गया है। सभी संकायों विभागों एवं कॉलेजों को शोध पत्रों के प्रकाशन के लिए प्रोत्साहित करने को कहा गया है। विवि ऐसा प्रयास कर रही है कि नैक की टीम के अगले वर्ष आने तक विवि शोध के क्षेत्र में और बेहतर करे। विवि में रिसर्च एवं डेवलमेंट सेल, आईटी सेल का गठन कर शैक्षणिक डाटाबेस तैयार किया जा रहा है।

ऐसे बढ़ा रिसर्च जर्नल पब्लिकेशन का दायरा

- 2019 : 217
- 2020 : 294
- 2021 : 415
- 2022 : 472
- 2023 : 122 (अभी जारी)

शोध के लिए विवि के प्रोत्साहन का काफी प्रभाव पड़ा है। अब न सिर्फ रिसर्च प्रोजेक्ट आ रहे हैं बल्कि रिसर्च जर्नल का पब्लिकेशन भी विगत दिनों में काफी बढ़ा है। इधर कुछ दशक में विवि के द्वारा यह बड़ी उपलब्धि है। विवि इससे भी बेहतर करने का प्रयास कर रही है। नैक की टीम आने तक इस वर्ष में एक हजार पब्लिकेशन कराने का लक्ष्य है।

-प्रो गिरीश कुमार चौधरी, कुलपति, पीयू